RAJBIL26868/2016/1284525

6 वर्ष 10 अंक

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद, देश व प्रदेश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

Jaivardhan News

हिन्दी मासिक पत्रिका

जून 2025

पेज संख्या : 28

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

vedanta
transforming for good
HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India
ज़िंक और सिल्वर से,
कल के हरित भविष्य को मजबूत बनाएं
• 2 वर्षों से विश्व की सबसे सस्टेनेबल मेटल्स और माइनिंग कंपनी का दर्जा प्राप्त*
• 2.41 गुना वाटर पॉजिटिव
• वित्त वर्ष 25 में 6.7 लाख tCO2e जीएचजी उत्सर्जन की बचत
• पर्यावरण और सुरक्षा पहलों के माध्यम से 5 लाख से अधिक लोगों को हुआ लाभ
WORLD ENVIRONMENT DAY
*as per S&P Global CSA 2024
Yashad Bhawan, Udaipur - 313 004, Rajasthan, INDIA. www.hzlindia.com CIN L27204RJ1966PLC001208
https://www.linkedin.com/company/hindustanzinc/
https://www.facebook.com/HindustanZinc/
https://twitter.com/Hindustan_Zinc
https://www.instagram.com/hindustan_zinc/

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाश
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

सहयोगी
परमेश्वरसिंह चुंडावत,
भावना शर्मा, सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स,
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद व आभारी है। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

सम्पादकीय

ऑपरेशन सिंदूर : शौर्य, समर्पण व राष्ट्रप्रेम

हाल ही में भारत-पाक तनाव के दौरान सेना द्वारा संचालित 'ऑपरेशन सिंदूर' न केवल एक सफल सैन्य रणनीति थी, बल्कि यह भारत माता के वीर सपूतों की अमर गाथा भी बन गया। यह वह समय था जब पूरा राष्ट्र एकजुट होकर सीमा पर खड़े सैनिकों के साथ खड़ा दिखाई दिया। रणभूमि में गूंजते जयघोष और घर-घर जलते दीपक इस बात के साक्षी थे कि राष्ट्र सबसे पहले है।

'जहाँ मौत भी सलाम करे, उस वीर जवान को,
जो तिरंगे में लिपटकर भी मुस्कुराता है।'

ऑपरेशन सिंदूर में हमारे फौजियों ने अदम्य साहस और अनुशासन का परिचय दिया। भारत की सेना ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब भारत केवल सहनशील राष्ट्र नहीं, बल्कि साहस का पर्याय है। जब दुश्मन ने हमारी सीमा की ओर आँख उठाई, तो हमारे वीरों ने आंधी बनकर उसकी हर साजिश को उड़ा दिया।

'वो काफिला लहू का था, कोई युद्ध नहीं,
हर क़दम पर तिरंगे की सौगंध थी वहीं।'

इस युद्ध में कई वीर जवानों ने अपने प्राणों की आहुति दी। किसी ने अपना पुत्र खोया, किसी ने पति, तो किसी ने भाई...। लेकिन हर आंसू में गर्व था, हर चिता पर एक दीप जल उठा देश के नाम। एक शहीद की पत्नी का यह वाक्य आज भी देशवासियों को झकझोर देता है –

'मैंने अपना सुहाग खोया है, लेकिन मातृभूमि का सिंदूर बचाया है।
जो मिट गया देश के लिए, वो जीवन हार नहीं,
उसकी चिता से जलती है भारत की अखंड दीपशिखा कहीं।'

ऐसे में हम सभी नागरिकों का यह परम दायित्व है कि हम उनके बलिदान को केवल खबर बनाकर न भूलें, बल्कि अपने जीवन में ईमानदारी, देशभक्ति और कर्तव्यनिष्ठा को आत्मसात करें। राष्ट्र निर्माण केवल सीमा पर नहीं, समाज के हर कोने में होता है।

'कलम से लेकर बंदूक तक, हर मोर्चा हमारा है,
जय हिंद का नारा अब हर सांस में हमारा है।'

ऑपरेशन सिंदूर' की गाथा केवल एक सैनिक अभियान नहीं, वह चेतना है– जो हर पीढ़ी को यह सिखाती है कि 'मिट्टी का कर्ज खून से चुकता होता है और जो उसे निभाए, वही सच्चा भारतवासी होता है।

वीणा वैष्णव रागिनी
साकेत साहित्य संस्थान, राजसमंद

प्रिंटिंग के क्षेत्र में वर्षो पुराना जाना-पहचाना विश्वसनीय नाम
अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित
सभी प्रकार की ऑफसेट प्रिंटिंग, मल्टीकलर शादी कार्ड, विजिटिंग कार्ड सभी प्रकार की प्रिंटिंग, रबर की मोहरें कम्प्यूटर जॉब, डिजाइनिंग, लेमिनेशन, स्पॉइल बाइंडिंग के लिए
ऑफसेट यूनिट
रमेश आचार्य 9414171545
आचार्य प्रिन्टर्स
जे-11 हस्तिनापुर, कांकरोली जिला राजसमन्द फोन नं. 02952-231545
आचार्य पब्लिसिटी
राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, माटी या मेवाड़ री, जस्ट राजसमंद के अलावा समस्त राज्य व राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्र-पत्रिकाओं में विज्ञापन देने की सुविधा उपलब्ध।
रमेश आचार्य 9414171545
आचार्य ई-मित्र
स्केन, मूल निवास, जाति, आय, जन्म, बिजली बिल, पेन कार्ड, अल्पसंख्यक प्रमाण पत्र, सभी प्रकार के ऑनलाइन फॉर्म व टोकन काटने की सुविधा उपलब्ध।
आत्मदीप आचार्य - 7014307942, 9461956731

राजसमंद जिले की खबरों से अपडेट रहने के लिए सब्सक्राइब करें
YouTube Channel
Jaivardhan News
जयवर्द्धन NEWS

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप भी भेज सकते हैं
खबर

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan News

कत्ल अपने ही सिंदूर का

भारत नारी प्रधान देश है, यहां पर नारी को देवी के रूप में माना जाता है, पूजा जाता है। उस नारी को देवी के रूप में लाने वाला और कोई नहीं पुरुष है, उसकी अच्छी सोच है, उसका नारी के प्रति भावनात्मक स्वभाव है। पुरुष कई बातें सोच लेता है, लेकिन जब भी नारी के बारे में सोचता है, उसमें प्रेम निहित होता है, एक दया का भाव होता है, एक आदर का भाव होता है, लेकिन कहीं न कहीं आपके इस भाव को आपकी कमजोर कड़ी के रूप में भी देखा जाता है। आज नारी पुरुष के बराबर चलती है, तो वह एक नारी के कारण नहीं, बल्कि उस पुरुष के कारण है, जो उसे हाथ पकड़ कर अपने साथ चलने को प्रेरित करता है।

पुरुष को हमेशा संदेह की दृष्टि से देखा जाता है और इसी कारण उसका शोषण होते हुए भी हमें कई जगह देखने को मिल जाता है। क्योंकि पुरुष उसे अपने समकक्ष खड़ा होते हुए देखने के लिए कई प्रयास करता है, उस वक्त उस स्त्री में एक अलग प्रकार की क्रिया का संचार होता है, वह भूल जाती है उस साथ को, उस समर्पण को जो पुरुष ने किया है। हां मैं मानता हूं कि स्त्री को पुरुष के बराबर दर्जा मिलना चाहिए, लेकिन न्याय के संदर्भ में, जब स्त्री में स्त्रीत्व के गुण समाप्त होने लगते हैं, तो समाज में एक अलग प्रकार विद्रोह स्थापित होने लगता है, जहां प्रेम, त्याग, स्वाभिमान, आत्म सम्मान सब कुछ नष्ट होते हुए नजर आते हैं। मैं किसी स्त्री की बुराई नहीं कर रहा हूं, क्योंकि मैं भी मातृशक्ति को इतनी ही इज्जत देता हूं, उसे मान सम्मान देता हूं, जितना कि मैं किसी मंदिर में जाकर ईश्वर को देता हूं, लेकिन कहीं न कहीं आज की परिस्थिति में बहुत कुछ बदला बदला सा नजर आने लगा है। आज स्त्री में प्रेम, मातृत्व, त्याग की भावना धीरे धीरे खत्म होती हुई नजर आ रही है। वह अपने घर में ही विद्रोह की भावना को जागृत करती हुई भी दिखाई दे रही है। इसके उलट आज पुरुषों में भावनात्मक दृष्टिकोण काफी बढ़ चुका है, लेकिन कहीं न कहीं वह असहाय, असहज, अपाहिज सा अपने आपको महसूस करता हुआ भी नजर आ ही जाता है।

आज के हालात पर अगर नजर डालें तो स्त्री का वीभत्स चेहरा हमें देखने को मिल जाता है, कल तक जो स्त्री अपने पति के सहारे अपने आपको महफूज समझती थी। आज उसके उलट पति अपने ही घर में एक हत्यारिन को देख रहा है, वह अपने ही घर में डरा, सहमा सा महसूस कर रहा है। पत्नी द्वारा अपने ही पति को प्रताड़ित करने और उसकी हत्या करने के कैस दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं।

8 साल पहले की बात है, एक लड़की ने घर आई हुई बारात को वापस रवाना कर दिया था। उसने आरोप लगाया था कि लड़के वालों ने दहेज मांगा था, मामला अदालत में पहुंचा। 1 साल तक जो दूल्हा बनकर आया था, उसे जेल में रहना पड़ा। 8 साल तक केस चला, उसके बाद जो परिणाम आए, वह चौंकाने वाले थे, वह लड़की पहले से किसी लड़के से प्यार करती थी और उसने यह झूठी कहानी गढ़ कर उस लड़के को और उसके परिवार को फंसा दिया था। आज उसका परिवार बिखर चुका है, उस लड़के के पिता सदमे को सहन नहीं कर सके और उनको दिल का दौरा पड़ा और वह मर गए।

कुछ ही महीनों पहले इंजीनियर अतुल सुभाष का सुसाइड केस आपको याद होगा, जिसने सुसाइड से पहले अपने ऊपर हुए जुल्मों की कहानी रिकॉर्ड की, फिर उसने अपनी जिंदगी को खत्म कर दिया, मरने से पहले उसने अपनी पत्नी निकिता सिंघानिया पर संगीन आरोप लगाए।

उसकी पत्नी की क्रूरता से वह इतना टूट चुका था कि उसको आखरी रास्ता अपनी मौत का ही नजर आया और उसने अंत में आत्महत्या करके इस जीवन को खत्म कर दिया। सोशल मीडिया पर जब अतुल सुभाष का वह वीडियो आया, तो एक बार पुनः पुरुष प्रधान समाज में एक डर का माहौल व्याप्त हो गया।

मेरठ का ड्रम वाला हत्याकांड तो आप सभी को याद ही होगा, यकीनन बहुत ही भयानक और दिल दहलाने वाला वह कांड आज भी जब हम महसूस करते हैं, तो सहम जाते हैं। मुस्कान रस्तोगी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने पति की निर्मम हत्या कर दी और उसको प्लास्टिक के एक बड़े ड्रम में काट कर डाल दिया। बात यहीं खत्म नहीं हुई, उस ड्रम में सीमेंट डालकर उसको पैक कर दिया और अपने प्रेमी के साथ घूमने मनाली निकल गई। मनाली में अपने प्रेमी के साथ कई ऐसे वीडियो नजर आए, जिसमें वह इंजॉय करती हुई दिखाई दे रही थी। इतना जघन्य कांड करने के बाद भी वह आराम से अपने प्रेमी के साथ मस्ती से घूम रही थी। जब मामले का खुलासा हुआ तो वह दृश्य देखकर पूरे भारत

में हाहाकार मच गया था।

हाल ही में इंदौर में रहने वाले राजा रघुवंशी की शादी सोनम से बड़े ही धूमधाम से होती है, दोनों हनीमून के लिए गुवाहाटी जाते हैं, वहां एक होटल लेते हैं और अपना सामान वहीं रखकर एक किराए की स्कूटी लेकर वह उन हसीन वादियों में घूमने निकल पड़ते हैं, लेकिन राजा रघुवंशी की नवविवाहित पत्नी सोनम तो यहां हनीमून के साथ-साथ कुछ और प्लान बनाकर आई थी। सोनम का प्लान इतना भयानक था कि उससे पूरा भारत सहम गया, उसने अपने यहां काम करने वाले एक साथी की मदद से तीन चार प्रोफेशनल किलर्स को हायर करती है और गुवाहाटी की हसीन वादियों में ही अपने पति का कत्ल करवा देती है। उसके पति राजा रघुवंशी की लाश अगले ही दिन मिल जाती है, लेकिन पत्नी का कहीं सुराग नहीं लगता। 15 दिन बाद एक ढाबे पर रात को 1 बजे एक ढाबे पर सोनम जाती है और कहती है कि मेरे साथ मेरा पति भी था और उसकी हत्या कर दी है लुटेरे ने। सब कुछ लूट लिया, मैं यहां कैसे आई। मुझे भी नहीं पता, वह उसके भाई को फोन करने के लिए ढाबे के मालिक को कहती है, तब ढाबे वाला उसको फोन दे देता है और पुलिस को भी सूचना देता है। जल्द ही पुलिस आ जाती है, जब इस घटना की पुलिस जांच करती है, तो बड़े ही चौंकाने वाले दृश्य सामने आते हैं। इस पूरे घटनाक्रम को खुद राजा रघुवंशी की पत्नी सोनम ने ही रचा और अपने सुहाग को ही मिटा दिया। इसमें एक दृश्य ऐसा भी आता है, जिसमें आजकल एक फैशन सा बन गया है और वह है शादी करके कुछ ही दिनों के बाद तलाक का मुकदमा दायर करना और पूरे परिवार को प्रताड़ित करके उनसे मोटी रकम वसूल करके अपनी जिंदगी को शानदार तरीके से बिताना।

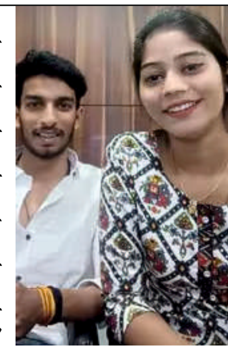

आखिर ऐसी घटनाएं बढ़ी क्यों, यह सवाल एक बहुत बड़ा मुद्दा है, थोड़ी तह तक जाकर जब हम देखते हैं, तो कुछ ऐसे दृश्य निकल कर आते हैं, जो विचलित कर जाते हैं। वासना, हवस, वाइल्ड सेक्स, अय्याशी, नशा.. संस्कारहीन परवरिश, चरित्रहीन व्यक्तित्व, घटिया संगत, दिखावा और कानून जो स्त्रियों की सुरक्षा के लिए बने हैं, उसका स्त्रियों के द्वारा दुरुपयोग करना, इन सभी के मुख्य स्रोत है।

आज हम आजादी के नाम पर बेटियों को बम के रूप में तैयार कर रहे हैं और परिवार का अति महत्वाकांक्षी होना उनको अपराध की ओर धकेलने का एक कारण भी हो सकता है ?

आज हमें जरूरत है कि हम अपने बच्चों की परवरिश पर पूरा ध्यान दें, उनको अच्छे और बुरे में फर्क समझाएं, उनको आजादी दीजिए, लेकिन उतनी ही जितनी जायज हो, नहीं तो इस बर्बादी के चक्कर में आप और आपका परिवार तो आएगा ही, लेकिन इससे समाज और देश को कितना नुकसान होगा, यह सोचना बहुत ही भयानक होगा और सरकार को भी कानून में बदलाव लाना होगा, नहीं तो यह सिलसिला अनवरत चलता रहेगा। क्या पता, कल ऐसे हादसे आपके और आपके परिवार के साथ भी घटित हो जाए, इन सभी घटनाओं से आज हर परिवार, हर समाज में एक भय का माहौल व्याप्त है, इसलिए इस पर गहन चिंतन करना बहुत जरूरी है।

राहुल दीक्षित 'RD'
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 9461016726

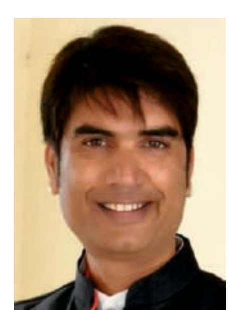

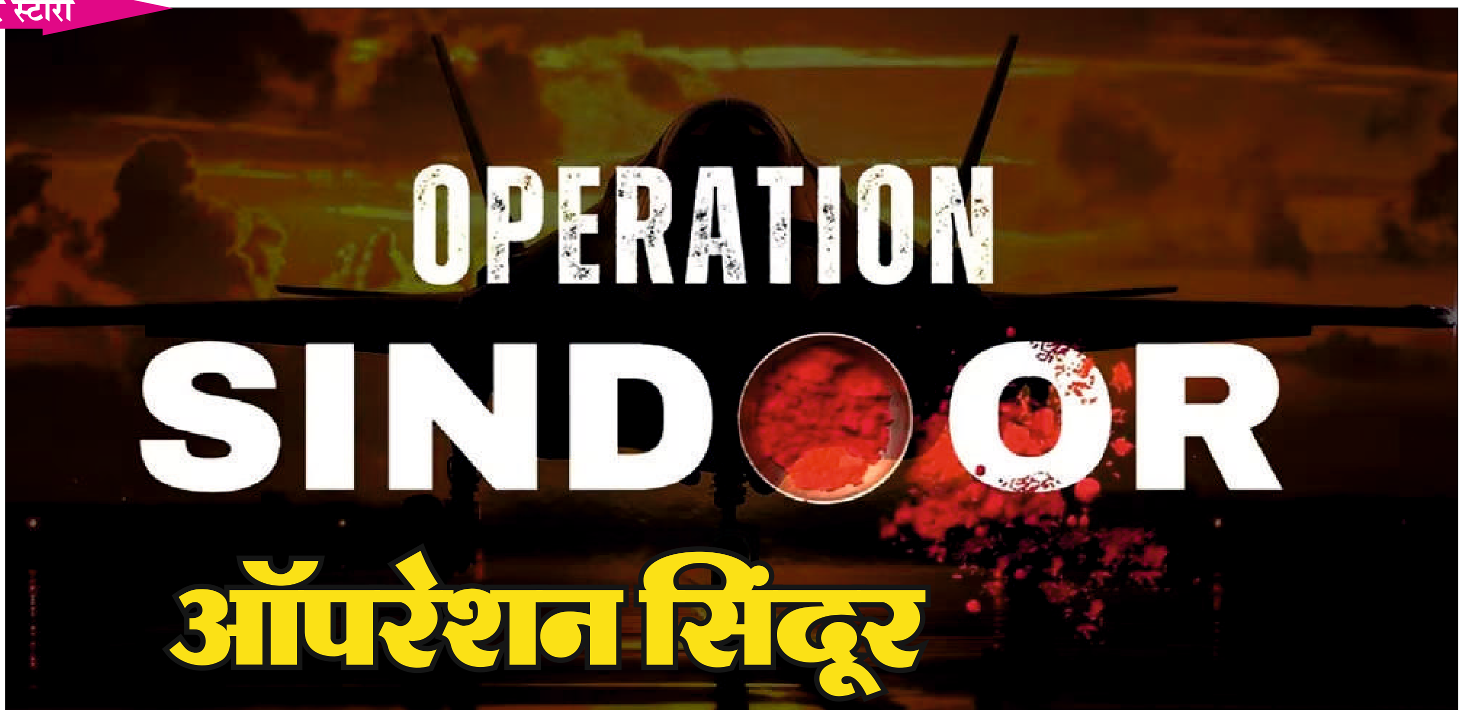

बीते 22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल पहलगाम के सुंदर रमणीय स्थल पर जहां ग्रीष्म की तपन में शीतलता और जीवन के सुखद एहसास की चाह में प्रकृति की गोद में विचरण कर शांति, तनाव मुक्त, सुकून प्राप्ति व तन-मन स्वस्थ्य की कामना में नव-विवाहित जोड़ें अपने मंगलकारी नव-जीवन प्रारब्ध और व्यस्त जीवन-शैली का कुछ मनोरंजन युक्त आनंददायी पल व्यतीत कर रहे थे, निर्दोष पर्यटकों पर हुए क्रूर-कृत्य में स्त्री-सिंदूर का अस्तित्व मिट गया, तो सिर से पिता का साया उठ गया। भाई बहन का प्रेम विच्छेद हुआ, तो कहीं एक मां का समय पूर्व ही अपने लाल से बिछोह हुआ और पारिवारिक पौरुष्य अप्रत्याशित सर्वदा के लिए मिटा दिया गया। खुद खून की होलियों में खुद ही रंग गए, सिंदूर का लाल रंग खून के लाल रंग में बह गया।

'स्वास्थ्य रिसोर्टस' के नाम से जाना जाने वाला सुप्रसिद्ध स्थल। जहां स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सहयोगी रिसोर्ट चलाए जाते हैं। क्या सहयोग मिला? हां मिला, जो मिला उसे भी जान गंवानी पड़ी। जगह-जगह, रह-रह कर खूनों की नदियां बह निकली, जिसका रूख किधर है, ये समझ पाना नामुमकिन-सा था।

अचानक गोली बारी हुई और सीधी सिर व सीने पार। देखते ही देखते यूं नरसंहार हो जाएगा, ऐसा अंदाजा न लगाया जा सकता था। भावुकता में उठे हाथ मदद को। गूंज उठी वादियों में संगिनी की एक करूण चित्कार और बह निकली खून की अश्रुधार। चहुंओर हा-हा-कार मची थी। अंतस से उठ रही पुकार।

इस तरह हुए नरसंहार से संपूर्ण देशवासियों का हृदय झकझोर गया। ऐसे अनायास हुए बर्बरता पूर्ण आतंकवादी दुर्व्यवहार से आक्रोशित हो भारत ने शेर की दहाड़-सी एक हुंकार भरी और प्रत्युतर में 7 मई 2025 को 'ऑपरेशन सिंदूर', रणनीतिक संयम पर आधारित सैद्धांतिक सैन्य सशस्त्र बल प्रतिक्रिया के अधिकार में जिम्मेदारी पूर्ण प्रभावी, सकारात्मक व गैर-उग्र संयमित परिधि में तत्कालीन प्रधानमंत्री द्वारा जन हित में निर्णय सफल उपलब्धी रहा।

ऑपरेशन में मानो भारतीय सेना का खून खोल रहा था। सेना अड़ी-खड़ी भारत-पाक महासंग्राम में निर्भीक डटी रही और बैरियों को मुख तोड़ जवाब में आगे बढ़ती रही और अपनी बहनों के सुहाग की खातिर जान पर खेल गयी। बैरियों की जंग में शहीद हुए जवानों के प्रति गहन संवेदनाओं से संपूर्ण भारत वर्ष के हृदय व जन-मानस पर शोक की लहर दौड़ गयी और जन-जन के हृदय से आह ! निकल पड़ी।

कर्तव्य पथ पर विरोधियों की मुठभेड़ मे सैन्य शक्ति में क्षति पहुँची है। शहीद हुए जवानों के दुःखद परिप्रेक्ष्य में हम सभी देशवासियों में गहन संवेदनाएँ भरी है। और संबंधित परिवारों के सदस्यों को सांत्वना व सहयोग की अनुशंसा करी है।

श्रीमती प्रेम कुमावत
भाणा, कांकरोली
जिला राजसमंद

भारत का गौरव

सैनिक होना अपने आप में गर्व है, गौरव है, भारत देश में तो सैनिक होना बड़ा ही गौरवशाली होता है। सैनिक एक शब्द नहीं, राष्ट्रहित तन मन धन से समर्पित एक ऐसा व्यक्तित्व होता है, जिसके सामने राष्ट्र से बढ़कर, राष्ट्र की रक्षा से बढ़कर कुछ नहीं होता है, सैनिक राष्ट्र के लिए हंसते-हंसते परिवार, समाज का त्याग कर खुद को राष्ट्र के लिए समर्पित कर देता है। सैनिक के लिए राष्ट्र प्रथम होता है, राष्ट्र की सेवा के लिए सैनिक के लिए कोई निश्चित समय नहीं होता है, उसे दिन- रात राष्ट्र के लिए तैयार रहना पड़ता है, तब जाकर राष्ट्र के भीतर आमजन खुशियों के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और राष्ट्र सुरक्षित रहता है।

सैनिक के जीवन में होली, दीपावली, रक्षाबंधन जैसे पर्व से बड़ा युद्ध का पर्व होता है, सैनिक ना सर्दी देखता है, ना गर्मी देखता है, तपती तेज धूप में और माइनस 45 डिग्री में भी सीमा पर खड़ा रहकर राष्ट्र की रक्षा करता है, जिस पर राष्ट्र को गर्व है। मुश्किल परिस्थितियों में रहकर राष्ट्र की रक्षा करने वाला एक सैनिक ही होता है, जब युद्ध जैसी परिस्थितियां देश में बन जाती है, तब सैनिक शत्रु से लड़ने के लिए पूरी ऊर्जा के साथ तैयार हो जाता है। वह यह नहीं सोचता है कि मैं युद्ध में मारा जाऊंगा, तो क्या होगा,वह युद्ध में जीतने के लिए सब कुछ दांव पर लगा देता है, मगर कभी पीठ नहीं दिखाता है।

सैनिक देश का स्वाभिमान, कभी झुकने नहीं देता और राष्ट्र के लिए जीवन पर्यंत समर्पित रहता है। अपने कर्तव्य से कभी विमुख नहीं होता है। हाल ही में भारत देश के जम्मू कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के अनंतनाग जिले से 45 किलोमीटर दूर पहलगाम नगर है, जो लिद्दर नदी के किनारे बसा एक सुंदर मनमोहक, प्राकृतिक, पर्यटन स्थल है, जो शंकुधारी वन, खूबसूरत झीले, फूलों के घास के मैदान, ठंडी जलवायु, अमरनाथ यात्रा के शुरुआत बिंदु के रूप में प्रसिद्ध कश्मीर का मिनी स्वीटजरलैंड कहां जाता है, जहां हजारों लोग घूमने आते हैं।

हाल ही में 22 अप्रैल 2025 को पहलगाम में आतंकवादियों ने 26 मासूम, युवाओं को गोली मार हत्या कर दी। सभी बहनों का सिंदूर उजाड़ा गया, जब यह आतंकवादी हमला पाकिस्तान से हुआ है, ऐसे सबूत मिलने पर भारत देश में आमजन में गुस्सा और सेना बदला लेने को आग बबूला हो रही है और भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ रहा है, जो सैनिक छुट्टियां लेकर घर आए, सबकी छुट्टियां रद्द कर दी गई। सभी सैनिक वापस अपने बटालियन में जा रहे हैं, एक पिता जब अपने सैनिक बेटे को ट्रेन में बैठाने आया, तब उस पिता ने अपने बेटे को राष्ट्रहित में लड़ने को हंसते-हंसते ट्रेन में बैठा कर भेज दिया और कहां जाओ बेटा देश के लिए कुछ करने का वक्त आया है, मुझे तुम पर गर्व है। राष्ट्र के लिए कुछ करके आओ, ऐसे भाव के साथ एक पिता ने एक सैनिक बेटे को युद्ध हेतु भेज दिया। पिता को भी पता है सैनिक बेटे के लिए राष्ट्र प्रथम होता है, उसका कर्तव्य है कि राष्ट्र पर जब-जब खतरा आए, वह तैयार रहे और 6 मई 2025 को भारतीय सेना ने ऑपरेशन

सिंदूर के द्वारा आतंकवादियों के ठिकानों पर ब्रह्मोस राफेल, s-400 जैसे मिसाइल से हमला कर 9 आतंकी ठिकानों को, 11 पाकिस्तानी एयरबेस को और 100 से अधिक आतंकवादियों को मार गिराया। इस तरह भारतीय सेना ने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब दिया। इसलिए सैनिक होना, कोई आम बात नहीं है। एक सैनिक का दर्जा देश में सबसे ऊंचा होना चाहिए और भारत देश में सबसे ऊंचा है-

चांद तारों से भी ऊंचा
उनका दर्जा है
आसमान में भी
उनकी ही चर्चा है
करते सिंह सी दहाड़
मातृ भूमि पर सदा
दुश्मन का दिल
धक धक करता है
वह सैनिक ही है
सच्चे भारत के
जिनका का सबसे ऊंचा दर्जा है

मदन जोशी 'सार्थक'
झाड़ोल, उदयपुर
साकेत साहित्य संस्थान
मो. 96804-74242

गधों का अखिल भारतीय सम्मेलन

8 मई को विश्व गधा दिवस मनाया जाता है। सभी गधे ख़ुशी से झूम रहे हैं, गा रहे हैं, अपना राग सुना रहे हैं। भाई हम लिखने वाले तो हमेशा से समझा रहे हैं, हर साल पहली अप्रैल मना रहे हैं। खुद को गधा कहला रहे हैं, गधों की शान बढ़ा रहे हैं। मगर हम लेखकों की बात सभी हंसी में उड़ाते रहे, हमें गधा समझते और उल्लू बनाते रहे। जब प्रधानमंत्री जी ने गधो का गुणगान समझाया और उनको अपना आदर्श बताया, तब सबको हर गधा याद आया। बस इसी बात से देश क्या विदेश तक का हर गधा इतराया, इसलिए उनको सम्मानित करने के लिए अखिल भारतीय गधा सम्मेलन दिल्ली में बुलाया।

भाई मुझको है राजधानी जाना, आप भी गधे हैं चले आना मत शर्माना। गधों की महिमा का कोई आर-पार नहीं है, गधा न हो, जिस जगह कोई घर, गली, गांव, शहर, कोई चैनल, कोई अख़बार नहीं है। इक महान हास्य रस के कवि कहते हैं- लोकतंत्र गधों का शासन है। घोड़ों को मिलती नहीं है घास और गधे खाते हैं चव्वनप्राश। राजनीति ने गधों से बहुत सबक पहले भी सीखे हैं, गधे सा रेंकना, दुलत्ती झाड़ना और सब मिल एक सुर में गाना, अपने को जनसेवक बताना, कभी किसी गधे को बाप तो कभी बाप को भी गधा बनाना। सत्ता सुख मिलता है इसी कला से, कोई आदमी जिये या मरे अपनी बला से। इस देश का वोटर समझदार कहलाता है, मगर वोट देने के बाद धोबी का गधा बन जाता है, न इधर का न उधर का रहता है, हर बार पछताता है।

कभी कभी हमारे देश में प्रशासनिक निर्णय देख लगता है इन्हें करने वाले ज़रूर गधे होंगे, कई बार दिलचस्प बात होती है, जब कोई मंत्री अपने सचिव से पूछता है, इस फाइल में लिखा ये फैसला किस गधे ने लिखा था और सचिव आदरपूर्वक जवाब देता है, श्रीमान आपने ही किया था ये महान कार्य। दफ्तर का चपरासी क्लर्क को, क्लर्क बड़े बाबू को, बड़े बाबू अधिकारी को आम तौर पर गधा ही समझते हैं। जब प्रधानमंत्री जी देश को बता रहे हैं कि वो दिन रात बिना आराम किये आपके काम किये जा रहे हैं, तब उनको पता नहीं शायद वो हम देशवासियों पर कितनी बड़ी तोहमत लगा रहे हैं। क्या जनता को बेरहम ज़ालिम बता रहे हैं, अपराधी ठहरा रहे हैं। हम यूं ही नहीं कुछ कहते आपको देश के नियम कायदे कानून बता रहे हैं।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की इक पुरानी अधिसूचना की याद दिला रहे हैं। जिसमें गधों के लिए लंच ब्रेक, ड्रिंक ब्रेक, काम के आठ घंटों का नियम, छुट्टी का नियम ही नहीं, दिन में 4-5 किलोमीटर से अधिक नहीं चलाना, सूरज निकलने से पहले और डूबने के बाद काम न लेने की सीमा, आंधी बरसात और उमस भरे मौसम में विश्राम, यहां तक कि प्रसूति के अवकाश का भी प्रावधान है। गधों को अब उनके मौलिक अधिकारों की जानकारी मिलनी ही चाहिए। ये सब उनकी भाषा में उनको बताया जाना ज़रूरी है। आम नागरिक को भले सरकार जीने के अधिकार नहीं दे सकती , गधों को न्याय मिलना ज़रूरी हो गया है, जब चुनाव में गधों का शोर है। गधे वोट डाल नहीं सकते, दिलवा तो सकते हैं, अगली सरकार गधों के हित का ध्यान रखने वाली हो तो बुरा क्या है।

हास्य अभिनेता जानीवाकर बड़े दूरदर्शी थे, उन्होंने बहुत पहले अपने गधे को गधों का लीडर घोषित कर बताया था। मेरा गधा गधों का लीडर कहता है कि दिल्ली जाकर सब मांगे अपनी पूरी करवा कर आऊंगा, नहीं तो घास न खाऊंगा। मगर मुंबई और दिल्ली का रास्ता बहुत लंबा है, उनका गधा अभी तक पहुंचा नहीं। शायद उसी ने राह में अपनी बात बता दी हो प्रधानमंत्री जी को, हो सकता है अब सम्मेलन में वही अध्यक्ष घोषित हो जाए। मुश्किल बहुत है इतने कड़े नियम। 4-5 किलोमीटर दिनभर में चलना, ड्रिंक और लंच ब्रेक और सबके साथ राह पर लाल बत्तियां, बिना प्रयोजक कैसे बात बनेगी। क्या इस चर्चा से कोई प्रयोजक मिलेगा, जो सब बेचना चाहता देसी गधे को अम्बेसडर बनाकर। गधों को दिल्ली पुलिस अनुमति देगी विरोध प्रदर्शन की या धारा 144 लगा देगी, कौन जानता है। नियम है रस्सी बांधने से पहले कपड़ा या कुशन बांधना होगा, इसका भी महत्व है। सरकारी काम काज कछुआ चाल से होते हैं, रस्सी में ढीलापन चाहिए, मनमानी करने को। सवाल बाक़ी छोड़ दिया गया है कि गधों के लिए घास का प्रबंध कौन करेगा। गधों के मालिक पर छोड़ना उचित नहीं है, सरकार को चारा घोटाले की जानकारी का उपयोग कर इसका हल भी खोजना चाहिए था।

इस कथा का अभी अंत नहीं हुआ है, थोड़ा विराम लेते हैं। गधों को समझते हैं, जिनको गधों की पहचान नहीं है, उनको समझाते हैं गधे हैं किस किस के बाप इतिहास बतलाते हैं।

डॉ. लोक सेतिया
एससीएफ 30 मॉडल टाउन
फतेहाबाद, हरियाणा 125050
मो. 9416792330, 9992040688

सब कुछ बदला नहीं, बदले तो मेरी पीढ़ी के संस्कार...

हैप्पी फादर्स डे... ! शब्द अंग्रेजी के लेकिन हिंदी की तरह दिल को उस समय छू गए, जब घर में घुसते ही बेटे - बेटियों ने अचानक से एक प्यारा और खुशबूदार उपहार हाथ पर रखते हुए बदन से लिपट गए। लेकिन बाप हूं न! तो उनके सामने अपनी आंखें भी गीली न कर सका। बेटे - बेटी नए जमाने के हैं, लेकिन मैं बाप तो अपने पिता के जमाने का ही हूं।

मुझे याद है मेरा वो बचपन, जब पिता से लिपटना तो दूर बिना बात उनके पास भी नहीं फटक सकते थे। वो जमाना अलग था, जहां न एक दिन के लिए फादर्स डे होता था, न मदर्स डे। वहां तो हर दिन फादर और मदर का दिन ही होता था। कितने खूबसूरत दिन थे..

न दुनियां का ग़म था
न रिश्तों के बंधन
बड़ी खूबसूरत थी
वो जिंदगानी

ऐसा नहीं कि वो हमे प्यार नहीं करते थे, प्यार तो खूब करते थे। आज के पिता से भी ज्यादा, लेकिन अनुशासन की रस्सी भी साथ रखते थे। अप्रत्याशित रूप से कभी - कभी बांध भी देते थे, लेकिन मजाल जो दिल के किसी कोने से उनके लिए कोई शिकायत तो निकल जाए। काशः वो आज पास होते तो देखते कि जमाना कितना बदल गया है।

प्रगति और भौतिक सुख की चाह ने रिश्तों को भी दिनों में बांट दिया है। वो जमाना हवा हो गया, जब मां- बाप ही जिंदगी का सर्वस्व हुआ करते थे। मुझे तो याद नहीं कि उनके बिना मेरा कोई सपना भी था। मेरे सपने सिर्फ उनकी जिंदगी के इर्द गिर्द ही घुमा करते थे। न कुछ बनने की इच्छा, न कुछ पाने की चाहत। जैसा उन्होंने चाहा, वही जिंदगी का उद्देश्य बन गया। जिंदगी का एकमात्र लक्ष्य यही था कि मेरी वजह से कभी उनकी आंख से आंसू न टपके और इस लक्ष्य को पाने में कोई कसर भी नहीं छोड़ी।

आज वो इस संसार में नहीं है, लेकिन उनकी स्मृतियां दिन रात आंखों के सामने घूमती है। हर वस्तु के मायने बदल गए, पैमाने बदल गए, लेकिन नहीं बदले हैं, तो मेरी पीढ़ी के दस्तूर, मेरी पीढ़ी के संस्कार.. वो आज भी अनवरत है और अनंत में विलीन होने तक साथ ही रहेंगे।

मधुप्रकाश लड्ढा
भाजपा पूर्व मीडिया संयोजक सौ फीट रोड, राजसमंद

धरती मां का दर्द

है क्रन्दन कुंत कानन में
अगणित विकार है आनन में
चहुं दिश फैला है अंधकार
बज रही फिर से प्रलय टंकार,,,
चीख रही वसुधा हर बार,,,
कौन है मेरा तारणहार ?

है भ्रमर ढूंढते कुसुम यहां
तितली भी बिन आगोश जहां
प्रांजल पोखर सूख गये
सरिता का अनहद नाद कहां ,,
युक्तियों का गर्जन बार बार,,,,
कौन है मेरा तारणहार ?

है नगण्य मृतिका के आंगन
पाषाण चमकते सीने में
ना देहरी है, ना है लांघन
बहता ना कोई पसीने में
बन रहा यहां हर कोई खूंखार,,,,
कौन है मेरा तारणहार ?

है रज सने पग कहीं नहीं
मृग चर्म आवरण ढके हुए
रश्मियां भी प्रखर प्रदीप्त नहीं
दे सके आभरण सजे हुए ,,,,
कृशकाय पड़े हैं पालनहार,,,,
कौन है मेरा तारणहार ?

है सकल सृष्टि के संपोषक
खग,मेघ,विटप,धेनु द्योतक
कुंठित है कोकिल तान यहां
आश्रित खेतों में धान जहां,,,
निर्दयी हुए हैं खेवनहार,,,,,
कौन है मेरा तारणहार ?

भावना पालीवाल
साकेत साहित्य संस्थान धोइंदा, राजसमंद

ऐसे क्यों हो डी. गुकेश ?

डी. गुकेश तुम ऐसे क्यों हो? इतनी बड़ी जीत पर तुम जोर से चिल्लाए नहीं, मुट्ठियां नहीं भींची, दांत नहीं किटकटाए, आंखें उबलकर बाहर नहीं आईं, प्रतिद्वंद्वी पर कटु नज़रों का प्रहार नहीं किया, बंदर की तरह उछले नहीं, बच्चों की तरह शोर नहीं मचाया? आंखें में बरसाती सैलाब नहीं बहाए? छैला बाबू की तरह डांस नहीं किया, मुंह नहीं बिचकाया? हाथों को विशेष मुद्रा में बनाकर कार्लसन को नहीं चिढ़ाया? जोर-जोर से हाथ उठाकर अपनी मर्दानगी को जगजाहिर नहीं किया? फर्श पर मुस्ठी प्रहार नहीं किया, आखिर तुम ऐसे कैसे हो-डी गुकेश।

तुम्हें जीत की खुशी नहीं हुई? तुम्हारा दिल बल्लियों नहीं उछला? मन में भांगड़ा की चाह न उठी? मन में गीतों का संचार नहीं हुआ? किसी सुन्दरी की ओर फ्लाइंग किस की इच्छा नहीं हुई? चेहर पर कोई भाव होता तो अंदाज लगा लेते, तुम्हारी अंतरंग खुशी का, उस अहसास का जिसे पाकर हर कोई पगला जाता। लेकिन इस जीत से शालीनता को नया शिखर मिला।

अरे... एक चौंका लगाने के बाद ऐसे उछल जाते हैं, जैसे दारासिंह को पटखनी दी हो और छक्का लग जाए तो क्रिकेट का खुदा समझने लगते हैं। तुरंत दूसरे के लिए हिकारत के भाव उभर आते हैं। तुम्हारी जगह कोई और खिलाड़ी होता तो पूरे हॉल का दौड़कर चक्कर लगाता, मीडिया पर बतियाता कैसे हराया? अगर नेता पुत्र होता तो सौ की स्पीड बाइक पर दौड़ जाता, स्टंट दिखाता। स्टार पुत्र होता तो चार-पांच सोए लोगों को रोंदकर जीत को सेलिब्रेट करता। अगर साहित्यकार को यह पुरस्कार मिला होता तो रात में ही फेसबुक और वाट्सएप पर हजारों सेल्फी लटका देता। एक आलेख छपने पर 56 लोगों को टैग करता है और इस तरह का पुरस्कार मिलता तो निश्चित रूप से 956 लोगों को टैग करता। अगर कोई रूपसी महिला होती तो मेकअप बॉक्स निकालती और फेस को फेसबुक लायक बनाती और फिर वाट्सएप पर चिपका देती।

तुम घोड़ों के खिलाड़ी हो, भला ये गधे क्या समझेंगे? ये क्या जाने तुम चौसट कला में माहिर हो। इनके पास एक कला आ जाने पर तोता था थैया करने लगते हैं। घोड़ों की अहमियत तो उसका सवार ही जानता है, भला पैदल की क्या औकात है, जो घोड़े की चाल को समझ सके। तुमने सफलता के नए आयाम रच दिए। इसे सहज रूप में स्वीकार करना हर किसी के बस में नहीं है। तुम्हारी शालीनता ने संस्कार जग के सामने उजागर कर दिए। अभी तो तुम्हारी दाड़ी मूंछ भी करीने से नहीं आई और तुमने कार्लसन जैसे दिग्गज को धूल चटा दी। केवल मात देने की बात नहीं है, लेकिन उसे इतना मानसिक रूप से विचलित कर दिया किया, वह हार से तिलमिला गया और कार्लसन ने खेल भावना तिरोहित कर दी। शतरंज के बोर्ड पर गुस्सा उतार दिया और साबित कर दिया वह खेल में ही नहीं बल्कि खेल भावना में भी परास्त हुआ है। उसकी बॉडी लेंग्वेज ने जाहिर कर दिया कि वह तुमसे बड़ा खिलाड़ी नहीं है। अब आने वाले समय में भले ही तुम्हें हरा दे लेकिन ये मैच और उसके बाद की प्रतिक्रिया विश्व कभी नहीं भूलेगा।

डी गुकेश अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? कुला मिलाकर 19 बसंत देखें हैं। बसंत में कितनी कोपले होती हैं, यह तक पता नहीं है और बसंत का अर्थ क्या होता है यह भी पता नहीं? फिर भी तुममें ये शालीनता कहां से आई? क्या तुम इस दुनिया में वास नहीं करते? बच्चों को उछल-कूद मचाते या चिढ़ाते नहीं देखते। जिद करते नहीं देखते? जो किशोर अवस्था के समय शरीर में विकास, उमंगों का तूफान और नए आकर्षण से बचे रहने का हुनर। चंचल मन को किस तरह संभालने में कामयाब रहे। तुम में तो बसंत और उससे आसपास उठने वाली तरंगों का कोई असर नहीं दिखाई दिया। क्या तुम्हें किशोरावस्था से उठकर यौवन की दहलीज पर पैर रखने में कोई अन्य विशेष आकर्षण/खिंचाव का अहसास नहीं हुआ?

बहरहाल.... डी गुकेश तुम्हारे व्यवहार ने जीत के साथ शालीनता का परचम लहरा दिया। सभी इस शालीनता पर कुर्बान हो गए। किसी ने तुम्हें अल्लाह का शुक्रिया करते नहीं देखा, हाथ जोड़कर ईश्वर का आभार प्रदर्शन करते नहीं देखा। जो भी किया मन में किया और शांति से जीत का जश्न मनाने के लिए दूसरों को छोड़ दिया। तुम्हारी शालीनता पर ऐसी करोड़ों चैम्पियनशिप न्यौछावर हैं।

सुनील जैन राही
वरिष्ठ व्यंग्यकार
नई दिल्ली
मो. 98109-60285

पर्यावरण चेतना का सनातनी उद्गम और पुष्टिमार्ग

पुष्टि संप्रदाय में स्नान यात्रा और ज्येष्ठाभिषेक भीषण ग्रीष्मकाल में जहां अपने प्रभु को शीतलता प्रदान कर सुख संतोष की अनुभूति करते हैं। भारतीय धर्म में सामाजिक सरोकारों के संदेश का एक सशक्त माध्यम खोज लेने की भी कोशिश है। जल शक्ति संबलन, संरक्षण और संवर्धन के संदेश वाहक ज्येष्ठ माह के नौतपाकाल में प्रभु को यमुना जल से निरंतर शीतल बना यह संदेश देने का भी प्रयास है कि हमारे देवालय भी जल और कल की प्रेरणा देने में पीछे नहीं। यह श्री यमुना जल के भाव से उपलब्ध विभिन्न जल स्रोतों के संरक्षण की बात हो अथवा उसे जन हितार्थ सुरक्षित, शुद्ध करने का आग्रह कहिए, प्राकृतिक तापों के हरण के लिए उसका संतुलित उपयोग करते हुए उसे सदैव 'सर्व दोष निवारक' करने का आग्रह इस अवसर पर पुष्टि सेवा में देखा जाता है। यह आग्रह सदियों से है, जो प्रमाणित करता है कि हमारी सोच भूत, वर्तमान और भविष्य का जैसे सनातन अभियान हो। यमुना जल को इसीलिए पुष्टि पंथ में मनुष्य के जन स्वास्थ्य को 'प्रतिबंधित करने वाले और हमारे ही द्वारा दूषित करने' के बावजूद आह्वान है स्वयं प्रभु का कि प्रकृति के वरदान नदी, नद, कूप और बाव के शुद्ध जल का ही स्नान और आचमन के लिए उपयोग कर स्वयं के साथ अपने प्रभु को भी प्रकृति पूजन का साक्षी बनने का अवसर दें। स्नानयात्रा और ज्येष्ठाभिषेक जैसे ग्रीष्मकाल में आयोजित पर्व जल रक्षण व शुद्धिकरण कर स्नान और आचमन की शिक्षा के पर्व हैं।

प्रासंगिक प्रश्न है, श्री यमुना को पुष्टिमार्ग में स्नान और आचमन के लिए वरीयता क्यों दी गयी है? पुष्टिमार्ग में यमुना जी को मातृ स्वरूपा कहा गया है। जहां गंगाजी दास्य भाव की मर्यादा मार्गी भक्ति की धारा का प्रतिनिधित्व करती हैं, वहीं यमुना जी पुष्टि भक्ति की धारा का। कहा गया है कि भगवान् श्रीकृष्ण की लीला के अनेक समूह या यूथ हैं। सिद्ध, श्रुतिरूपा, कुमारिका और चतुर्थ यूथ यमुना जी का जिसकी वे स्वामिनी हैं। माना गया है कि यमुना सभी सिद्धियों को देने वाली हैं, भक्त को सेवोपयोगी देह देने वाली हैं और श्रीकृष्ण लीलाओं के दर्शन की सामर्थ्य देने वाली हैं। वे आपदाओं से उत्पन्न विघ्नों का विनाश करने वाली हैं, स्नानयात्रा और ज्येष्ठाभिषेक के दिन की मुख्य

आराधिका हैं।

समग्रतः हमारी सनातनी परम्परा में प्रकृति-पर्यावरण की मानव जीवन में अनिवार्यता और प्रासंगिकता को निरन्तर बनाए रखने के लिए इन्हें हमारे आराध्य व आराध्य स्थलों से जोड़ दिया गया है। हमारे समस्त देवी देवताओं को प्रकृति रक्षक के रूप में हमारे ऋषिवृंद ने योजित कर उन दैव पुरुषों को पर्यावरणीय चेतना के आध्यात्मिक घटक के रूप में स्थापित कर दिया। बृह्मा, विष्णु, महेश, श्रीकृष्ण, राम, गंगा, यमुना, काली आदि को प्रकृति रक्षक के रूप में जिस विशाल परिदृश्य के साथ प्रस्तुत किया है, वह शोध का विषय है। यह आलेख उसी सनातनी परम्परा को जल संरक्षण, संवर्द्धन और यमुना स्तवन सहित जीवन जल के शुद्धिकरण जैसे विषयों के सन्दर्भ में समझने का विनम्र प्रयास है।

डा. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार व शिक्षाविद्
श्री द्वारकाधीश मंदिर मार्ग, कांकरोली
जिला राजसमंद
मो. 9460252308

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
डिजिटल राजस्थान, समृद्ध राजस्थान
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

व्यंग्य- हालात

सर्वदलीय सर्वपूजक मौकापरस्त

सरकारी जंवाई और फूफे-फूफियां

सरकारी जँवाइयों की तरह-तरह की विचित्र किस्मों में सर्वाधिक संख्या उनकी है, जो मौकापरस्त हैं और अवसरवादी मानसिकता के मामले में इनका कोई जवाब नहीं। यों इनके लिए निर्धारित सेवाओं के ठोस आचरण नियम हैं, नीति और निर्देश हैं और समय-समय पर जारी आदेश भी हैं, लेकिन इनकी पालना कितनी हो पाती है, यह किसी से छिपा हुआ नहीं। कारण कि पालन करने वाले और कराने वालों की मानसिकता में कहीं कोई अन्तर नहीं है। अवसर की तलाश में गिद्धों की पैनी दृष्टि हो या फिर गिरगिटिया रंगबदलू अवस्था, या फिर मत्स्य-बगुला दृष्टि, गाय-बगुला संबंध हो या और किसी भी प्रकार के रिश्ते, इस वर्ग में वे सारे गुण और हुनर विद्यमान हैं, जिनसे हरकतों, करतूतों और कारनामों की कहीं स्वाभाविक और कहीं सिजेरियन प्रसूति होती है।

इस मौकापरस्ती वाली परम्परा में ड्यूटी, ईमानदारी, कर्त्तव्य परायणता और समर्पण भाव कोई मायने नहीं रखता। सर्वाधिक असर करता है आकाओं के प्रति दुमहिलाने, जयगान करते हुए परिक्रमा करते और उन्हें खुश करने के लिए किए जाने वाले सारे जतन और रास्ते। दो-चार को खुश कर दो, खुश किए रखो और फिर हजारों के साथ चाहे जो करो, खुली छूट रहती है, कोई पूछने वाला नहीं। दुनिया के सारे गधे इसी तरह अपने आपको अखाड़ची पहलवान मानते हुए घास बेचकर गुलाब जामुन और रसगुल्ले खा भी रहे हैं और इसकी चाशनी में नहा भी रहे हैं। अपने आस-पास और साथ वालों को यह चाशनी चाटने का भरपूर मौका भी दे रहे हैं।

कहने को राजधर्म में निरपेक्ष भाव प्राथमिक शर्त है, लेकिन पांच साल आकाओं के आगे-पीछे घूमने वाले, अर्दलियों की तरह उनके प्रासाद और गोपनीय गलियारों में सेवा-चाकरी करने वाले साठ साला सरकारी जंवाइयों का पूरा ही जीवन दुम हिलाते हुए फ्रीस्टाईल मौज-मस्ती और आयातित पराए एवं उन्मुक्त भोग-विलासी बाड़ों में गुजर रहा है। आका जहां कहीं जाते हैं, वहां भेड़ों की रेवड़ की तरह तमाम किस्मों के उपकृतों की भीड़ जुटी रहती है। अपने सारे काम-धाम और ड्यूटी को छोड़कर वो भी ड्यूटी अवर्स में। दलों और विचारधाराओं से दूरी बनाए रखना इनके लिए प्रतिबंधित हो सकता है, किसी की चापलूसी, जयगान और परिक्रमा करते हुए व्यक्ति पूजा करने से कोई नहीं रोक सकता इन्हें। फिर जो इनके सुख-दुःख का ख्याल रखता है वही इनके लिए माता-पिता और भगवान से कम नहीं होता। एक बार मां- बाप और भगवान को धकिया सकते हैं, पर अपने आका को नहीं। मजे की बात ये कि अनपढ़-गँवारों के सामने पढ़े-लिखे ऐसे पेश आते हैं, जैसे कि जरखरीद गुलाम या मनोरोगी।

इस मामले में किसम-किसम के नुमाइन्दों को देखा जा सकता है। इनके लिए हर सरकार और हर पार्टी उनकी अपनी है, जो सत्ता में होती है। खूब सारे हैं जो अपने घरों पर सत्ता के हिसाब से झण्डे बदलते रहते हैं। इनके पास हर पार्टी के झण्डे हमेशा तैयार रहते हैं। जो पार्टी चुनाव में जीत जाती है, उसी का झण्डा अपने घर की छत पर लगा देते हैं। हारने वाली पार्टी का झण्डा आलमारी में बंद हो जाता है। नहीं बदलता है तो सिर्फ वह डण्डा, जो कई दशक निकाल देता है। इसी तरह इन पार्टियों के नेताओं की तस्वीरों की भी अदला-बदली कुछ-कुछ साल में होती रहती है।

इसी तरह कई दिन तक चलने वाली विभिन्न प्रदर्शनियों में जिस दिन जो वीआईपी आने वाला होता है, उससे संबंधित कुछ एक्स्ट्रा फोटोग्राफ्स लगा दिए जाते हैं, ताकि वो अभिभूत होकर आशीर्वाद देकर ही लौटे। इसी तरह मनचाहे स्थान पर बने रहने या तबादला व पोस्टिंग के इच्छुक हों या फिर तबादला रुकवाने की गरज हो, तब ये सरकारी जंवाई और फूफे-फूफियां अपने आपको सत्तारूढ़ दल के पक्ष का बताकर अपना काम निकाल लेते हैं।

ऐसे खूब सारे हैं जिनके लिए हर पार्टी अपनी सत्ता के समय यही लिखकर डिजायर काटती है कि ये अपने हैं। शासन कांग्रेस का हो तब ये बन्दे अपने आपको कांग्रेस विचारधारा का सिद्ध कर डालते हुए स्थानीय नेताओं से मनचाही सिफारिश लिखवा कर भिजवा देते हैं और शासन भाजपा का आ जा जाए, तब अपने आपको आरएसएस और बीजेपी का बताकर डिजायर कटवा देते हैं।

बहुत बड़ी संख्या ऐसे डिजायर ड्राइवरों की है जो हर शासन में अपने आपको उसी पार्टी का समर्थक या प्रशंसक बताते हुए पोस्टिंग और ट्रांसफर की रेवड़ियों भरे ट्रकों को हांकते हुए अपने नाम करा लेते हैं। इनकी पूरी जिन्दगी में पेश की गई सारी डिजायरों को एक जगह इकट्ठा करके देखा जाए तो दिखेगा कि ये किसी के नहीं हैं, अवसर को भुनाने वाले हैं। ऐसे कामों में सहयोग करने वाले छुटभैयों और दलालों की आजकल कहीं कोई कमी नहीं है। फिर डिजायरों का सृजन किन आधारों पर होता है, इसे समझदार लोग अच्छी तरह जानते हैं। सत्ता की हर सड़क पर ये स्विफ्ट डिजायरें सरपट भागती हुई सैर-सपाटों का मजा लेती और देती रहती हैं।

यही हाल भक्तों का भी है। बहुत से भक्तों ने अपने घरों में कई-कई गुरुओं की तस्वीरें लगा रखी हैं। किसी एक गुरु से संबंधित कोई कार्यक्रम हो या गुरु स्वयं पधारते हैं, तब उसी गुरु की तस्वीर नज़र आती है, बाकी सारे गुरु कहीं अंधेरे कक्ष में समाधिस्थ कर दिए जाते हैं। गुरुओं के आने और उनके आयोजनों के अनुसार गुरुओं की तस्वीरें बदलती रहती हैं और सामान्य दिनों में 4-5 गुरुओं के पावन दर्शन होते हैं, जिससे हर आगंतुक इन्हें महान धार्मिक, आध्यात्मिक मानकर अभिभूत हो उठता है।

इन गुरुओं की तस्वीरों के सामने ही इनके चेले-चेलियां झूठ-फरेब, अन्याय, शोषण और अनाचार से भरे पापकर्म करते रहते हैं। क्योंकि इन्हें पक्का विश्वास होता है कि इतने सारे समर्थ गुरुओं के रहते उनके सारे पापों का कोई अस्तित्व नहीं रहने वाला।

यही कारण है कि बड़े-बड़े भ्रष्ट अफसर, नेता, अपराधी, चोर-डकैत, ब्याजखोर, नशाखोर, अतिक्रमण कर जमीन-जायदाद हड़पने वाले, फाइनेन्सर और मुफ्त का माल उड़ाने वाले, शोषण, अत्याचारी, अनाचारी, मां-बाप और पत्नी को प्रताड़ित करने वाले असामाजिक तत्व आदि इन गुरुओं की भक्त बनकर गुरु महिमा का वर्णन करते हुए चेले-चेलियों की रेवड़ का आकार बनाने के लिए हर तरह के हथकण्डों का इस्तेमाल करते रहते हैं।

गुरु कृपा का वरदान साथ हो तो फिर क्या पाप और क्या बुरा कर्म। आखिर हमने गुरु बनाए ही किसलिए हैं? फिर समर्थ गुरु ऐसे कि चाहे जो कर या करा सकते हैं। इन गुरुओं का भगवान या धर्म से कोई लेना-देना नहीं होता, मगर सरकार चलाने वालों से कुछ भी करा सकने का सामर्थ्य इनमें होता है।

अपने पूर्वजों के गौरव, आत्म स्वाभिमान और नैतिक मूल्यों तथा संस्कारों को छोड़कर मनमानी और मनचाही हरकतों के लिए बहुत जरूरी हो चला है, अपने आपको गिरवी रखना या पूरी तरह बेच देना। ऐशो-आराम, धन-वैभव और लोकप्रियता को ही जिन्दगी का मुख्य ध्येय समझ चुके हम लोगों के लिए बेशर्मी और सर्वांग-प्रत्यंग समर्पण के सारे द्वार खुले हुए हैं।

डॉ. दीपक आचार्य
अधिस्वीकृत स्वतंत्र पत्रकार
रिटायर्ड संयुक्त निदेशक
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग
निवास - 35, महालक्ष्मी चौक,
बांसवाड़ा - 327001
मो. 9413306077

अनोखे व्यक्तित्व का साहित्यकार स्व. फतहलाल गुर्जर "अनोखा"

प्रभु द्वारकाधीश की पावन नगरी कांकरोली की इस धरा पर हर क्षेत्र में एक से बढ़कर एक कई ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व वाले महापुरूषों ने जन्म लेकर इस धरा के गौरव को चार चांद लगाए हैं। अन्य कई क्षेत्र के ऐसे ही महापुरुष के बारे में आप गत कई वर्ष से "मेरा गांव मेरा लोग'' कॉलम में पढ़ते आ रहे हैं। आज हम साहित्य के क्षेत्र में एक विलक्षण प्रतिभा वाले कवि, नाटककार और इतिहासकार के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अनेकानेक पुस्तके लिख साहित्य जगत में एक विशिष्ठ स्थान बनाया है। वैसे तो स्व. कंठमणि जी शास्त्री, स्व. गोकुलानंदन जी तेलंग, स्व. कवि घनश्याम के बाद साहित्य के क्षेत्र में स्व. श्री दाम सुदाम, स्व. अरूणकान्त जी सांचीहर, स्व. फतहलाल जी गुर्जर अनोखा, स्व. दुर्गाशंकर मधु ने साहित्य जगत को बहुत कुछ साहित्य दिया हैं। और उनके ही समकालीन कवि और कथाकार कमर जी मेवाड़ी और चतुर जी कोठारी, जो आज भी पुरी सक्रियता से साहित्य सृजन कर रहे हैं। और इस धरा की शान बढ़ा रहे हैं।

स्व. फतहलाल गुर्जर अनोखा का जन्म कांकरोली की पावन धरती पर स्व. राधाकृष्ण जी गुर्जर जाट गली, सुरजपोल कांकरोली में 17 अक्टूबर 1939 को माता श्रीमती स्व. छोटी बाई गुर्जर की कोख से हुआ। अपना बचपन माता-पिता की छत्र छांया में बीताकर जब आप कुछ बड़े हुए तो स्थानीय स्कूल में आपकी शिक्षा - दीक्षा प्रारंभ हुई। वे बचपन से ही साहित्य के प्रति रूचि रखते थे। अपने स्कूल काल में ही उन्होंने कविताएं व नाटक लिखने और नाटक का मंचन करने का कार्य प्रारंभ कर दिया था। वे जिस विद्यालय में पढ़ते थे, उसी विद्यालय में मुझे भी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे मेरे अग्रज व मुझसे करीब 3-4 साल बडे थे। पर उनका स्नेह सदैव मुझे मिलता रहा। जब उन्होंने एक समाज सुधारक नाटक "नुग्ता" (करियावर यानि मृत्युभोज) लिखकर और उसे अपने मार्गदर्शन में उसका मंचन स्कूल में किया। तो ये मेरा सौभाग्य था कि उस नाटक में उन्होंने मुझे भी एक पात्र के रूप में चुना। उस नाटक में स्व. रतनलाल जी बोल्या, स्व. प्रकाश सनाढ्य, स्व. दुर्गाशंकर मधु, नंदलाल आदि कई साथी थे। नाटक सफल रहा। उस वक्त के हमारे नेता स्व. निरंजननाथ आचार्य ने जब यह नाटक देखा तो इस नाटक से वे बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने इस नाटक को कई आस पास के गांवों में मंचन कराने की व्यवस्था की। नाटक था ही समाज को दिशा देने वाला और समाज को सुधारने वाला। बस फिर क्या था स्व. अनोखा जी को मानों जैसे पर लग गए हो, वे धड़ल्ले से कई कविताएं, कहानियां, और नाटक लिखने लगे।

जब वे अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके तो वे अध्यापक के पद पर राजकीय सेवा में लग गए। और बच्चों में कविताओं और नाटको के द्वारा शिक्षा की अलख जगाने लगे। यह संयोग ही था कि अनोखा जी के साथ ही मैंने भी एसटीसी की ट्रेनिंग की। जिसमें हमारे साथ स्व. अरूणकांत जी सांचीहर, स्व. दुर्गाशंकर मधु, स्व. सुरेशचन्द्र कावडिया, स्व. सुआलाल टेलर, स्व. चम्पालाल लोहार, स्व. मांगीलाल अफंगी और अम्बालाल पालीवाल आदि अनेक साथी थे। इसी एसटीसी ट्रेनिंग के दौरान स्व. अनोखा जी ने एक नाटक राणा राजसिंह लिखा और हम सबने मिलकर उस नाटक को नौचैकी की पाल के मंच पर किया। जिसमें राणा राजसिंह का पार्ट मैंने खुद अदा किया, तो भामाशाह स्व. अनोखा जी और चुण्डावत जी का रोल स्व. अरूणकांत जी ने, और राणा राजसिंह की पत्नी का रोल स्व. चम्पालाल लोहार ने किया। इस नाटक के गीत स्व. अरूणकांत जी सांचीहर ने लिखे। उनका लिखा गीत "ये कहानी राणा राजसिंह मेवाड की" बहुत मशहूर हुआ। इस नाटक को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। उसके बाद तो इस नाटक को अनेक गांवों के स्कूलों ने अपने स्तर पर किया।

स्व. अनोखाजी ने साहित्य के अनेकानेक सौंपानों को पार किया। वे साहित्य की कई विधाओं में साहित्य सर्जन किया करते थे। कविता के साथ दोहे, गजल, मुक्तक, सोरठे, छंद और मुर्किया भी

उन्होंने लिखी। बृज भाषा और राजस्थानी भाषा में भी आपने कई रचनाएं लिखी। आपने लगभग 30 पुस्तकें साहित्य की भिन्न-भिन्न विधाओं में लिखी। जिसका साहित्य जगत में उचित मूल्यांकन हुआ। आपकी मृत्यु से कुछ ही समय पहले आपने एक ऐतिहासिक ग्रंथ "पन्नाधाय" लिखा, जो काफी चर्चित हुआ, जिसमें उन्होंने पन्नाधाय को ऐतिहासिक तथ्यों के साथ गुर्जर होना साबित किया। आपकी सभी साहित्य रचनाओं के बारे में इस कॉलम में लिखना संभव नहीं है, संक्षेप में बस इतना ही कि आपका साहित्य सृजन आने वाले साहित्यकारों के लिए मार्गदर्शन का काम करेगा।

आपने एक साहित्यिक संस्था का भी गठन किया, श्री द्वारकेष राष्ट्रीय साहित्य परिषद। इस संस्था के माध्यम से आपने कई आयोजन किए और लोगों में साहित्य के प्रति अभिरूचि जागृत की। एक लम्बे समय से साहित्य की ये अविरल धारा इस कांकरोली में बिना रूके, बिना थमें बही जा रही है। आज कांकरोली में कई साहित्यिक संस्थाएं साहित्य सृजन में लगी हुई है। इसे पुर्खों का ही आर्शीवाद माना जाएगा।

स्व. अनोखा जी एक साहित्यकार के साथ- साथ समाजसेवी भी थे। वे नगर विकास परिषद और लोक अधिकार मंच से भी जुड़े रहे, जिसमें लोगों के जीवन विकास में उन्होंने अनेकानेक काम किए। वे सदुणी स्वभाव के व्यक्ति थे। अदब की छतरी और रोज शाम को राजसमन्द की पाल पर घुमने जाना, आपकी दैनिक दिनचर्या थी।

वे पारिवारिक दृष्टि से भी परिपक्व थे। आपकी शादी नाथद्वारा निवासी स्व. चन्दा देवी गुर्जर के साथ हुई थी। आपके दो बिटियां श्रीमती रमा देवी, श्रीमती मंजु देवी, पुत्र श्री धर्मेन्द्र कुमार, श्री हेमन्त कुमार, और श्री चन्द्रशेखर जो आज भी अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए अपने कुल की मान-मर्यादा बनाए हुए हैं।

आप लगभग 1 सवा वर्ष तक गुर्दे की बीमारी से जुझते हुए अपने सभी साथियों को अपने घर बुला काव्य गोष्ठियां करते रहे। हम सभी साथी संघी, कवि साहित्यकार इस दरमियान कई बार आपके घर जाते, आपकी तबियत पुछते, वे ठहाका मारकर हंसते और कहते अरे यार, जीवन मरण तो अनादिकाल से चलता आया है, तुम तो कोई नई रचना लिखी हो, तो सुनाओं नहीं तो लो, मैंने कल ही ये रचना लिखी है सुनो, ऐसे जवांदिल और जांबाज मित्र अनोखा जी अचानक ही दिनांक 29 नवम्बर 2023 को स्वर्ग सिधार गए। कांकरोली के सभी साहित्यकारों ने व साहित्य प्रेमियों ने श्रद्धांजलि दी और उनके जीवन को सराहा। उन्हें और उनके साहित्य को शत्-शत् नमन करते हुए मेरी ओर से उन्हे हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफजल खां अफ़ज़ल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, कांकरोली
मो. 98284-75288

कविता

शहादत को सलाम

हिंद के हर वासी के रग –रग में प्रवाहित रक्त,
स्वतंत्र स्वराज का कण–कण जिस पर आसक्त,
धारा धरा गगन पवन सहस्त्र है जिससे आर्द्र
शौर्य दिवस पर आज, करता नमन कृतज्ञ राष्ट्र।

दृश्य घृणित देख-देख जगी स्वाभिमान की अगन
नयनों में सुलगती नित्य प्रति अंगारों- सी तपन
मौन शांतिप्रिय नहीं, वीर प्रतापी-से क्रान्ति प्रिय
कतरा-कतरा शोणित जिसका हो समर्पित राष्ट्र
शौर्य दिवस पर आज, करता नमन कृतज्ञ राष्ट्र..

जाते-जाते जन गण मन में एक चिंगारी सुलगा गए
स्वाधिकार स्वराज की खातिर लगन ऐसी लगा गए
कि दयनीय दारुण दशा,देख दमन की पराकाष्ठा ,
सांडर्सों परजीवियों पर टूट पड़े बन कर नर व्याघ्र
शौर्य दिवस पर आज, करता नमन कृतज्ञ राष्ट्र..

गीदड़ कांपे थर -थर -थर, सुन सिंहों की दहाड़े
समय पूर्व ही डरपोकों ने फांसी पर है चढ़ा दिया
बंध गए मातभौम के प्रेमपाश में ऐसे थे मतवाले
इंकलाब की गूंज संग कर गए जनमत आर्द्र सांद्र
शौर्य दिवस पर आज, करता नमन कृतज्ञ राष्ट्र...

हे, नव ऊर्जा स्रोत ! नवोत्थान नवनिर्माण करना
जीवन डगर पर डगमग -डगमग ना डोलना
क्षणिक सुख खातिर स्वाभिमान गिरवी ना रखना
आर्यावर्त के आर्य, मां भारती के सजग सपूतों !
स्मृतियां शहादत की करती रहे नित्य करुणार्द्र
शौर्य दिवस पर आज, करता नमन कृतज्ञ राष्ट्र...

नारायणी कुमावत
साकेत साहित्य संस्थान, राजसमन्द
मो. 9602203960

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी
मूलभुत समस्या, नवाचार,
आयोजन, मुद्दे, लेख,
चुटकले, कहानी, कविता
हमें भेजे
E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

पर्यावरण संरक्षण : एक अवसर

आजकल हर कोई पर्यावरण संरक्षण की बात करता है। बड़े-बड़े नेता और अधिकारी पर्यावरण बचाने के लिए बड़े-बड़े भाषण देते हैं। देने भी चाहिए, क्योंकि पर्यावरण की बात करना बहुत सरल है। पर्यावरण संरक्षण के नाम पर बड़ी-बड़ी पौधारोपण की योजनाएं जिसके बड़े-बड़े आंकड़े, बड़े-बड़े होर्डिंग्स हर एक को आकर्षित करते हैं। हाई रिजुलेशन कैमरे से पौधारोपण करते नेताओं और अधिकारियों के फोटो अक्सर सोशल मीडिया और अखबारों की सुर्खियां बनती है। यह पौधारोपण कार्यक्रम ही है, जिसकी बदौलत काफी नेताओं को प्रकृतिप्रेमी और पर्यावरण प्रेमी के नाम पर जाना जाता है। आजकल तो हर मौके पर पौधे उपहार में देने की परंपरा चल गई है। छोटे-छोटे गमले में छोटे-छोटे पौधे देखकर हम इस पर्यावरण पर मानो बड़ा उपकार कर रहे हैं।

वैसे सरकार आमजन की सेवा की अन्य भी कई योजनाएं लाती है, मगर आमजन की सेवा में कमी रहने पर लोग आवाज उठा देते हैं। जैसे हर घर शौचालय जैसी योजनाओं में, जिनको शौचालय नहीं मिला, वह भी चौराहे पर जिम्मेदारों के खिलाफ आवाज उठाते हैं और मजबूरन जिम्मेदारों को अपनी व्यवस्थाएं सुधारनी पड़ती है। सिर्फ पर्यावरण ही एकमात्र इस तरह की योजना है, जिसमें कोई शिकायत नहीं कर सकता। करोड़ों, लाखों पौधे लगाने के आंकड़े वाहवाही के लिए बड़े काम आते हैं, पर्यावरण प्रेमी गांव, पर्यावरण प्रेमी शहर और पर्यावरण प्रेमी जिला तक की घोषणाएं हो जाती है, मगर इन योजनाओं में मुरझाए पौधे कभी आकर सरकार का दरवाजा नहीं खटखटाते हैं, न ही पूछते हैं कि हमारा अस्तित्व कहां है।

नेताओं और अधिकारियों को इस बात का ख्याल है कि यह धरती सीमित है। अगर पूरी धरती पर पौधारोपण कर दिया तो अगले वर्ष किस नाम पर योजनाएं लाई जाएगी। इसलिए पौधारोपण के फोटो खींच कर पुनः अगले वर्ष के लिए इस धरती को इस लायक रखा जाता है कि वहां पर फिर से पौधारोपण किया जा सके।

नर्सरी में पौधे तैयार करने के आंकड़े, पौधारोपण के आंकड़े, फिर पौधों को नियमित टैंकर से पानी पिलाने के आंकड़े और फिर उन पौधों की सुरक्षा में ट्री गार्ड लगाने के आंकड़े, यह सारे आंकड़े बिल की शोभा बढ़ाते हैं। अक्सर इस तरह के बिलों के भुगतान नियमित एसी में बैठने वाले अधिकारियों और नेताओं को बड़ी ठंडक देते है, मगर इस तरह की योजनाओं के दिखावे के बाद बेतरतीब बिखरे होर्डिंग बैनर और पोस्टर इस धरती की गर्मी को बढ़ाते नजर आते हैं।

एक सवाल है, जो हमें खुद से पूछना चाहिए। क्या हम सच में पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ करना चाहते हैं या यह सिर्फ एक दिखावा है? अगर हम सच में पर्यावरण संरक्षण के लिए कुछ करना चाहते हैं, तो हमें अपने दैनिक जीवन में कुछ बदलाव लाने होंगे और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। तभी हम अपने पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा कर पाएंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और समृद्ध भविष्य की दिशा में कदम बढ़ा पाएंगे।

विजय शर्मा
'खबरां मेवाडी', राजसमंद

गुजरात प्लेन हादसा: बेगुनाहों की चीखें और सवालों का सन्नाटा

गुजरात की धरती पर 12 जून 2025 को ऐसा मंजर सामने आया, जिसने पूरे भारत को झकझोर कर रख दिया। एक प्लेन के क्रैश होने से सैकड़ों जिंदगियां चंद पलों में खत्म हो गईं। हादसे में जान गंवाने वाले यात्री किसी के मां-बाप, किसी के बेटे-बेटी, तो किसी के जीवनसाथी थे। सोशल मीडिया पर फैली तस्वीरें और वीडियो इतनी मार्मिक हैं कि उन्हें देखकर किसी का भी दिल दहल जाए।

घटना स्थल पर बिखरे शव, जलती मलबे की चिंगारियां और परिजनों की चीख-पुकार ने पूरे देश को गमगीन कर दिया। साथ ही सवाल भी उठ रहे हैं कि आखिर इस हादसे का जिम्मेदार कौन है। लोगों के मन में सबसे बड़ा सवाल यही है कि आखिर कब तक ऐसी घटनाएं होती रहेंगी और कब मिलेगा इसका स्थायी हल?

सिस्टम की चूक या तकनीकी खामी?

प्राथमिक जानकारी के अनुसार, यह चार्टर प्लेन एक निजी कंपनी का था और इसमें कुल 12 यात्री सवार थे। टेकऑफ के कुछ मिनट बाद ही विमान ने तकनीकी खराबी की सूचना दी और कुछ ही देर में वह खेतों में जा गिरा। हालांकि जांच एजेंसियों की टीमें काम में जुटी हैं, पर यह सवाल बड़ा है कि –

क्या इस हादसे को टाला जा सकता था?

क्या विमान की समय पर जांच नहीं हुई थी?

अगर तकनीकी जांच पूरी तरह की गई होती तो शायद आज इतने मासूम चेहरे हमारे बीच होते।

सवाल जो मांग रहे जवाब

1. क्या एयरलाइंस के नियमों की अनदेखी हुई है?
2. DGCA (नागर विमानन महानिदेशालय) की निगरानी कितनी सख्त और व्यावहारिक है?
3. क्या हर विमान उड़ान से पहले अनिवार्य तकनीकी जांच से गुजरता है?
4. आपात स्थिति से निपटने के लिए क्रू को पर्याप्त ट्रेनिंग दी जाती है या नहीं?

यह हादसा सिर्फ एक तकनीकी चूक नहीं, बल्कि सिस्टम की गंभीर लापरवाही का परिणाम भी हो सकता है। अगर अब भी सख्त कदम नहीं उठाए गए, तो अगला हादसा कहीं और, किसी और की जिंदगी लील सकता है।

यह हादसा नहीं, चेतावनी है

गुजरात के इस दर्दनाक हादसे ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारत की एविएशन व्यवस्था में अभी भी गंभीर खामियां हैं। यह वक्त संवेदना जताने के साथ-साथ सिस्टम को आईना दिखाने का है। यह जरूरी है कि जांच रिपोर्ट को पारदर्शिता के साथ सामने लाया जाए और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

अविनाश चतुर्वेदी

वरिष्ठ पत्रकार, चित्तौड़गढ़

ऑपरेशन सिंदूर

नकली वर्दी में घुसकर,
पहलगाम में आतंक मचाया।
सुहागिनों के सामने,
उनका सुहाग उठाया।।

अरे ! बुजदिलों फिर, कायरता दिखला दी।
गंदे दिमाग की फिर, बरबरता बतला दी।

नारी शक्ति को तुमने,
अबला कैसे माना।
चुटकी भर सिंदूर को,
तुमने कम कैसे जाना।

तुमने सिंदूर के नाम से ललकारा।
हमने 'ऑपरेशन सिंदूर' से फटकारा।

बंदूक की नोक पर,
नारी शक्ति को भुलाया।
उसी नारी शक्ति ने,
पलटकर आंतंकियों को रुलाया।

तुमने धर्म पूछकर मारा,
हमने धर्म दिखलाया।
सोफिया कुरेशी ने,
राष्ट्रधर्म का, झंडा फहराया।

व्योमिका सिंह ने,
नया परचम लहराया।
हर हिन्दुस्तानी को,
उस पर नाज है आया।

'ऑपरेशन सिंदूर', भारत का अभिमान,
सब गर्व से बोलो, जय-जय हिन्दुस्तान।।

प्रेमलता चोरड़िया 'बोल्या'
साकेत साहित्य संस्थान,
कांकरोली, राजसमंद

सिंदूर

नव विवाहित जोड़े,
्रीत में रंगीन होके
समय व्यतीत करे,
संगिनी के संग में।

ये कश्मीरी वादियों में,
मस्ती भरे आनंद में
तन-मन रंग गया,
प्रकृति के रंग में।

पलक झपकते ही,
देखो पल भर में ही
उजड़ गया सिंदूर,
बेरियों की जंग में।

धूला माँग का सिंदूर,
सूखी ममता की धार,
है रक्त भरे अश्रु ये,
जिंदगी बेरंग में।।

सपने हैं तार-तार,
रो रहें हैं झार-झार,
ह्रदय के अंतस से,
उठी ये चित्कार है।

हमले आतंकियों के,
तब देश वासियों के,
उठे हाथ मदद को,
लगाई गुहार है।

रखी सिंदूर की लाज,
देखो सिंदूर ने आज,
सुन कर जनता की,
करुण पुकार है।

पाक की फुंकार पर,
आतंकी को ढेर कर
प्रतिउत्तर मे भरे,
भारत हुँकार है।।

श्रीमती प्रेम कुमावत, भाणा
साकेत साहित्य संस्थान

पता है, पर निकलने पर

पता है, पर निकलने पर
कोई नहीं रहता कहने में
दु:खी व्यथित नहीं होना
सुकून है सिर्फ सहने में ।

रीत यह दुनिया की पुरानी
भोगी सभी ने ऐसी कहानी
दाता बन दिया उनके लिए
आएगी सुबह सुहावनी ।

समय कैसा आया अजब
धूप में रह दी जिन्हें छांव
शूल सीने में चुभ जाता
जब वो करते कांव कांव ।

सिखाई जिन्हें गिनती हमने
वो पहाड़े हमें सिखला रहे हैं
देख अद्भुत उन्नति उनकी
मन हम अपना बहला रहे हैं ।

अब देख लिया आजमाकर
अपने हो या पराए बच्चे
घर परिवार हो या गुरुकुल
दिख जाते किस्से सच्चे ।

बन गए दूर देश के पंछी
मैं ठहरा पेड़ हरा भरा
स्वागत आगत का करना
बन रक्षक देना पहरा ।।

नारायणसिंह निराकार
प्रिंसीपल व साहित्यकार
साकेत साहित्य संस्थान, राजसमन्द
मो. 94134-23585

व्यंग्य

डिजिटल देशभक्त का बिलबिलाना

हाथों में मोबाइल अथवा लैपटॉप के साथ एयरकंडीशंड कमरों में बैठा देशभक्त, राष्ट्रीय संकट पर चिंतित, बेचैन और व्यथित हैं। रक्त-बीज की तरह पनप रहे डिजिटल देशभक्तों की अद्भुत विशेषताएं होती है। जुबानी जंग के लिए यह हमेशा सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते हैं। इन समूहों में तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग जैसे शिक्षाविद, साहित्यकार एवं पत्रकार आदि आते हैं। यह अलग बात है कि इनका तन-मन किसी न किसी राजनीतिक पार्टी के वशीभूत होता है। जिसकी झलक इनके लगभग हर पोस्ट पर संबंधित पार्टी प्रमुखो के यशोगान अथवा विरोधी पार्टी की भर्त्सना संदेश में दिख जाता है।

दो खेमों में बंटे सोशल मीडिया के ऐसे राष्ट्र भक्त हमेशा वन साइडेड होते हैं। इन्हें सरकार का हर कदम या तो पूर्णतः उचित लगता है अथवा सरासर गलत। मजे की बात है कि सरकार विरोधी अथवा सरकार की अनुषंगी विचार धारा वाले दोनों ही समूह के सदस्य राष्ट्र भक्त होने का दावा करते हैं तथा अपने पोस्ट के माध्यम से इसे साबित करने का प्रयास भी करते हैं।

डिजिटल देशभक्त हर छोटी-बड़ी घटना पर संज्ञान लेते हैं और अपने सोशल मीडिया अकाउंट से सरकार एवं सरकारी तंत्र को यथोचित राय और सलाह दिया करते हैं। जब बात राष्ट्र के सुरक्षा की आती है, तो उनका खून उबाल मारने लगता है। युद्ध और पड़ोसी मुल्क को नेस्तनाबूद करने के लिए इनकी भुजाएँ फड़कने लगती है। वह ऊंगलियों को तकलीफ देकर घटना पर संवेदना व्यक्त करता है और राष्ट्र प्रधान से तत्काल कार्रवाई की माँग तक कर डालता है। कार्रवाई में विलंब होने अथवा नहीं होने की स्थिति में मुक्त कंठ से सरकार को गरियाते हुए भी दिख जाता हैं। विरोधी अथवा शत्रु से ज्यादा देश के पीएम को ललकारता है।

डिजिटल देशभक्त आशावादी होते हैं। यह मानव संहारक युद्ध को भी क्रिकेट मैच अथवा उत्सव की तरह देखते हैं। पलंग अथवा स्लीप वैल के गद्दे पर पसर कर सोशल मीडिया के अब्दुल हमीद एक हाथ में टीवी का रिमोट और एक हाथ में मोबाइल रखकर राष्ट्रीय समस्या का निदान करने का प्रयास करते हैं। बीच-बीच में सोशल मीडिया पर राष्ट्रवादी पोस्ट कर अपनी देशभक्ति का डिजिटल प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत करते रहते हैं।

डिजिटल देशभक्त सकारात्मक सोच के पक्षधर होते हैं। इनको हमेशा यही लगता है कि युद्ध में सामने वाला विरोधी मुल्क खाक में मिल जाएगा और इनके देश में एक मेमना तक को खरोंच नहीं आएगी। राष्ट्रीय संप्रभुता, आर्थिकी एवं अंतरराष्ट्रीय समीकरण के ज्ञान का नेशनलोग्लोबिन इनके शुद्ध एवं अशुद्ध रक्त के साथ हृदय से फेफड़ों तक परिसंचरित होता रहता है।

डिजिटल देशभक्त का मनोबल उस समय टूट जाता है जब सोशल मीडिया पर संविधान द्वारा प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का भरपूर इस्तेमाल करने के बावजूद इनके पोस्ट पर सरकार, सेना अथवा सिविलियन नहीं पहुँच पाती अथवा उनके द्वारा नज़र अंदाज़ कर दी जाती है। इन्हें इस बात का गम अंदर ही अंदर खाए जाता है कि संकट की घड़ी में सरकार या सेना इनसे राय-परामर्श नहीं ले रही और इनके मनोनुकूल घटना को अंजाम नहीं दिया जा रहा।

गाँव के प्रधान से राष्ट्र प्रधान तक हैश टैग वाले इनके पोस्ट पर संज्ञान नहीं लिये जाने से ऐसे डिजिटल देशभक्त तिलमिला जाते हैं, बिलबिला उठते हैं और शत्रु मुल्क के प्रति गुस्सा और अपना बाहुबल दोनों ही भड़ास पोस्ट के माध्यम से सरकार अथवा सोशल मीडिया के मित्रों पर निकाल कर अपनी चित्ताग्नि को शांत करने का प्रयास करते हैं।

विनोद कुमार "विक्की"
व्यंग्यकार, खगड़िया (बिहार)
मो. 7765954969

जयवर्द्धन NEWS

जयवर्द्धन

C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स, द्वितीय मंजिल,
सौ फीट रोड, राजसमंद मो. 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन